आज की अव्यक्त मुरली का सहज सार ---------- Date: 21-09-14

हम बच्चों को सत्यता का पाठ पढ़ाकर, आप समान सत्य स्वरूप बनाने वाले, मीठे-मीठे बापदादा ने हम बच्चों को रॉयल्टी के संस्कार की सही समझ देते हुए कहा - रॉयल्टी के संस्कार वाली आत्मा में इच्छा-मात्रम-अविधा और दांता-पन के संस्कार इमर्ज रुप में होगे. ऐसे रॉयल्टी बाले किसी भी प्रकार के मायावी आकर्षण तरफ संकल्प मात्र से भी झुकेंगे नहीं अर्थात प्रभावित नहीं होंगे. वह सदा अपनी सर्व कर्मेन्द्रियों द्वारा कोई ने कोई प्राप्ति कराने वाले अर्थात देने वाले दाता होंगे.

बापदादा ने आगे कहा, ऐसी रॉयल्टी वाली आत्मा बनने के लिए किस बात की रीयल्टी हमारे में चाहिए?

- पहले अपने सत्य स्वरूप - आत्मिक स्वरूप की रीयल्टी. बापदादा ने कहा, अगर अपने असली स्वरूप (आत्मिक स्वरूप) की सदा स्मृति है तो स्वरूप की रीयल्टी (अपनी देही-अभिमानी स्थिति) से इस स्थूल सूरत में भी अलौकिक रॉयल्टी नजर आयेगी. जो भी देखेंगे उनके मुख से यही निकलेगा कि यह इस दुनिया के नहीं हैं लेकिन अलौकिक दुनिया के फरिश्ते हैं अथवा यह स्वर्ग का कोई देवता उतरा है. ऐसी रॉयल्टी का अनुभव करेंगे.

- दूसरी बात स्मृति में भी रीयल्टी अर्थात एक बाप दूसरा न कोई. जिनकी स्मृति में सदा बाप समाया होगा उसके कर्म में या बोल में रॉयल्टी दिखाई देगी. हर कर्म सत्य अर्थात श्रेष्ठ होने के कारण जो भी सम्पर्क में आयेंगे उन्हें हर कर्म में बाप समान चरित्र अनुभव होंगे. हर बोल में बाप के समान अथॉरिटी और प्राप्ति की अनुभूति होगी अर्थात हर बोल समर्थ अर्थात फल देने वाला होगा. जिसको कहा जाता है सत-वचन. ऐसे कर्म और बोल में सत्यता की रॉयल्टी होगी.

- उनका सम्पर्क अर्थात संग रीयल होने के कारण पारस का कार्य करेगा. जैसे पारस लोहे को परिवर्तन कर देता है - ऐसे सत्यता की रॉयल्टी वाली आत्मा का संग असमर्थ को समर्थ बना देगा अर्थात नकली को असली बना देगा.

- ऐसी आत्मा के रीयल और रोयल नयन अर्थात दिव्य दृष्टि जादू की वस्तु समान काम करेंगे. बाबा हमें साकार मुरलीओं में सदा कहते है की तुम्हारी एक आँख में मुक्ति और दूसरी आँख में जीवनमुक्ति होनी चाहिए यानी जिस आत्मा ने स्वदर्शन चक्र का अभ्यास बहुत-बहुत किया हो ऐसी आत्मा के नयनों से दूसरों को अभी-अभी जीवनमुक्ति के स्टेज की अनुभूति, अभी-अभी अति सुखमय जीवन का अनुभव करायेंगे. उनके नयन "हम सो-सो हम" के जादू के मन्त्र का अनुभव करायेंगे अर्थात ८४ जन्मो का ही ज्ञान स्मृति में दिलायेंगे. उनके नयनों से अभी-अभी स्थूलवतन - संगमयुग के सुख की अनुभव करायेंगे, अभी-अभी सूक्ष्म फरिश्ते स्वरूप का अनुभव करायेंगे. अभी-अभी परमधाम निवासी आत्मिक स्वरूप का अनुभव करायेंगे, अभी-अभी स्वर्ग के सुखमय जीवन का अनुभव करायेंगे. ऐसे उनके नयनों से एक सेकण्ड में इन चारों धामों का अनुभव करायेंगे, यह है जादू मन्त्र. ॐ शांति.